''अनुसूचित जातियों का व्यावसायिक परिवर्तनः एक समाजशास्त्रीय अध्ययन''

डॉ0 अनन्त कुमार भारती

स्वतंत्रता के पहले अशिक्षा, जमींदारी का अधिकार, आदि के कारण अनुसूचित जाति के लोगों की चेतना अधिक नहीं बढ़ सकी थी, परंतु स्वतंत्रता के उपरांत जमींदारी उन्मूलन, पंचायत मताधिकार, अनूसूचित जातियों के विशेषाधिकार, शिक्षा प्रसार तथा समाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक तथा राजनीतिक विचार एवं व्यवहार में काफी परिर्वतन दृष्टिगोचर हो रहा है। एक समय था कि दलितों की परछाई से भी उच्च वर्ग के लोगों का शरीर अपवित्र हो जाता था। अब वैसी स्थिति नहीं है। आज आरा जिला के ग्रामीण तथा शहरी जीवन के अनूसूचित जाति एक अभिन्न अंग हैं। आज वे अपने पारंपरिक व्यवसाय में परिवर्तन करके सफाई, घरेलू नौकर, बाजा बजाने तथा ड्राइवर इत्यादि का कार्य करके अपना आर्थिक संवर्धन कर रहे हैं।